हैं। उम्मीद है सुधीजनों को रुक कर सोचने पर मजबूर करेंगी ये स्त्रियाँ। शुभकामनाओं सहित। ■

पुस्तक : प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ, लेखक : गीताश्री, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, मूल्य-125 रु

पता : बी-3, टीचर्स फ्लैट, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, सर गंगा अस्पताल मार्ग के निकट, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060
मो. : 09971816506

प्रवासी रचनाकार साक्षात्कार के दर्पण से

■ पंकज सुबीर

अमेरिका की प्रवासी हिन्दी लेखिका सुधा ओम ढींगरा एक ऐसी रचनाकार हैं; जो कुछ-न-कुछ नया करती रहती हैं और अपने समकालीन प्रवासी लेखकों को भी अपने साथ लेकर चलने का उद्योग भी करती रहती हैं। सुधा ओम ढींगरा स्वयं भी एक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। उनके तीन कहानी संग्रह (कमरा नंबर 103, कौन सी ज़मीन अपनी तथा वसूली), तीन कविता संग्रह (धूप से रूठी चाँदनी, तलाश पहचान की तथा सफ़र यादों का), एक अनुवाद (परिक्रमा, पंजाबी से हिन्दी में अनुवाद), एक संपादन (मेरा दावा है, अमेरिका के प्रवासी कवियों का संकलन) तथा कुछ अन्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, लेकिन उनकी एक बड़ी विशेषता यह भी है कि वे समकालीन प्रवासी रचनाकारों को भी साहित्य-मंच पर लाकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती रही हैं। उनकी अभी एक नई कृति आई है -वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ, जिसमें आठ देशों के चौबीस हिन्दी लेखकों के साक्षात्कार हैं। इनमें से तेईस साक्षात्कार सुधा ओम ढींगरा ने तथा एक कंचन सिंह चौहान ने लिया है। इन साक्षात्कारों का बीजीकरण 'गर्भनाल' पत्रिका से हुआ, जिसमें 'बातचीत' स्तम्भ के अंतर्गत तीन वर्ष तक विदेशों में रहने वाले हिन्दी लेखकों के साक्षात्कार प्रकाशित होते रहे। यह आयोजन फ़ोन, ऑनलाइन और स्काइप जैसी आधुनिक तकनीक से हुआ। तभी हज़ारों किलोमीटर दूर बैठे लेखक से वार्तालाप हो सका। मैंने स्वयं कुछ ऐसे ही दो प्रयोग किये थे। मॉरिशस के हिन्दी लेखक अभिमन्यु अनत तथा बच्चन से मैंने पत्र-साक्षात्कार लिए थे; जो इस विधा के आरम्भिक प्रयोग थे। सुध ा जी ने अपने साक्षात्कारों में 'नवीनतम वैज्ञानिक उपकरणों' का प्रयोग किया है और साक्षात्कार विधा को नई ऊँचाइयों तथा नई दिशाओं तक पहुँचाया है। उनका लक्ष्य रहा है कि वे प्रवासी रचनाकारों को एक पुस्तक में समेट कर हिन्दी-विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करें और वे निश्चय ही इसमें सफल हुई हैं।

सुधा ओम ढींगरा ने अमेरिका से 11, कैनेडा से 2, ब्रिटेन से 4, डेनमार्क से 1, नार्वे से 1, आबुधाबी से 1, शारजाह से 1 तथा भारत से 2 रचनाकार लिए हैं। कंचन सिंह चौहान का सुधा ओम ढींगरा का लिया साक्षात्कार है; जो इनके जीवन एवं विचार के बारे में कई नई जानकारियाँ देता है और इस कृति की रचयिता का साक्षात्कार प्रस्तुत करके एक नई रोचक परम्परा शुरू करता है। इस पुस्तक के साक्षात्कारों से स्पष्ट है कि सुधा जी ने अपनी जिज्ञासाओं और प्रश्नों को काफी सोच-समझ कर तैयार किया है और इसका ध्यान रखा है कि रचनाकार से प्रायः वही प्रश्न किये जाएँ जो रचनात्मकता एवं संवेदना से जुड़े हैं। इस कारण रचनाकार के बदलने पर प्रश्नों के रूप भी बदलते चलते हैं, यद्यपि कुछ प्रश्न प्रायः ऐसे भी हैं; जो सभी रचनाकारों से पूछे जा सकते हैं। तीन वर्षों तक 'गर्भनाल' में निरन्तर भिन्न-भिन्न लेखकों से साक्षात्कार लेना और उन्हें प्रकाशित कराते रहने में सुधा जी की जीवटता, कर्मशीलता तथा अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठा देखी जा सकती है।

इस ग्रन्थ के लेखक हैं -वेद प्रकाश 'वटुक, सुशम बेदी, सुद नि प्रियदर्शिनी, अनिल प्रभा कुमार, पुष्पा सक्सेना, मृदुल कीर्ति, रेखा मैत्रा, देवी नागरानी, शशि पाधा, राकेश खंडेलवाल, अनीता कपूर (अमेरिका), हरि शंकर आदेश, श्याम त्रिपाठी (कैनेडा), तेजेन्द्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, अचला शर्मा, दिव्या माथुर (ब्रिटेन), अर्चना पैन्यूली(डेनमार्क), सुरेश चन्द्र शुक्ल (नार्वे), कृष्ण बिहारी, पूर्णिमा वर्मन (खाड़ी देश), एस.आर. हरनोट, रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' (भारत) तथा सुधा ओम ढींगरा (अमेरिका)। इन लेखकों का पहली बार सम्वेत रूप में हिन्दी विश्व से साक्षात्कार हो रहा है; जो निश्चित रूप में लेखक-पाठक की आत्मीयता को विकसित करेगी और पाठकों में इन प्रवासी हिन्दी लेखकों के साहित्य के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए प्रेरित करेगी। प्रत्येक लेखक के विचारों में अपनी निजता है, उसकी विशिष्ट सृजन प्रक्रिया एवं विचारों का सौंदर्य है। यदि प्रवासी, प्रवासी साहित्य, प्रवासी लेखक आदि को लेकर प्रश्न उठे हैं तथा जो उत्तर इस पुस्तक में हैं, उनसे एक समग्र चिन्तन निकलता है। इन लेखकों के विचारों से 'प्रवासी साहित्य' एक नए युग का आरम्भ है। कुछ प्रवासी साहित्य तथा प्रवासी लेखक कहलाने के पक्ष में हैं, कुछ नहीं हैं और कुछ को इसकी चिंता नहीं है कि कोई क्या कहता है। तेजेन्द्र शर्मा का कहना है कि हम प्रवासी हैं, लेखक हैं, अतः प्रवासी लेखक कहने में कोई हर्ज़ नहीं है।

प्रवासी साहित्य में दो संस्कृतियों का संघर्ष है,स्वदेश-परदेश का द्वंद्व है, नॉस्टेल्जिया भी है, किन्तु वह एक नई संवेदना, नई चेतना, नई जीवन दृष्टि एवं नए सरोकार से परिपूर्ण है और यह उसकी विशिष्ट पहचान है। कुछ लेखकों को शिकायत है कि

प्रवासी साहित्य को मुख्यधारा का अंग नहीं माना जाता, उसे आरक्षण का साहित्य माना जाता है, किन्तु अब स्थिति बदली है और बदल रही है। प्रवासी साहित्य पर मेरी पुस्तक 'हिन्दी का प्रवासी साहित्य' (600 पृष्ठ) इस विषय की पहली पुस्तक है और कई विश्वविद्यालयों में शोध हो रहा है, पत्रिकाएँ 'प्रवासी अंक' निकाल रही हैं और साहित्य अकादमी के द्वारा प्रकाशित होने वाले हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक अध्याय प्रवासी साहित्य पर दिया गया है। एक लेखक ने राजेन्द्र यादव के प्रवासी साहित्य पर 'हंस' में प्रकाशित टिप्पणी की आलोचना की है तथा जो प्रवासी साहित्य को हिन्दू साहित्य मानते हैं (राजेन्द्र यादव), उन्हें तेजेन्द्र शर्मा ने समुचित उत्तर देते हुए कहा है-भारत के संपादक और आलोचक का कहना है कि यदि आप वामपंथ के साथ नहीं हैं तो फिर दक्षिणपंथ के साथ हैं। कुछ वरिष्ठ लेखकों का तो यह मानना हैं कि यदि आपके पास कोई राजनीतिक दृष्टिकोण नहीं है तो आप अच्छे लेखक बन ही नहीं सकते। विदेश में रहने वाले लेखकों का इस तरह की राजनीति से कुछ लेना-देना नहीं है। यहाँ हिन्दी मंदिरों में सिखाई जाती है। भारतीय मूल के लोग बच्चों को पूजा करवाने के लिये नहीं ले जाते, बल्कि अपनी भाषा के माध्यम से अपने संस्कार सिखाने ले जाते हैं। हमारे साहित्य के थीम हमारी अपनी अपनाई हुई ज़िन्दगी से जुड़े होते हैं। हमारी समस्या यह है कि भारतीय आलोचकों, लेखकों एवं संपादकों ने यह जीवन देखा नहीं है; शायद इसीलिए उन्हें विदेशी हिन्दी लेखकों का साहित्य समझ नहीं आता।

अंत में सुधा ओम ढींगरा ने इस पुस्तक से हिन्दी प्रवासी लेखकों की अज्ञात दुनिया का दरवाज़ा खोल दिया है और अब वे परदेसी नहीं स्वदेशी लगते हैं । यह एक नया प्रयोग है और इसमें वे पूर्णतः सफल हैं अभी इसका दूसरा खंड आना है और तब प्रवासी साहित्य का वाङ्मय और भी विस्तृत और घनीभूत होगा। प्रवासी लेखिका सुधा ओम ढींगरा ने यह नई शुरुआत की है, अब कुछ अन्य लेखकों को भी सामने आना चाहिए और अपने सृजन-कर्म एवं विचारों को एक-एक पुस्तक में प्रस्तुत करना चाहिए। लेखक और पाठक के संगम के लिए यह एक उपयोगी रास्ता है। प्रवासी साहित्य की अभी कई नई दिशाएँ खुलनी हैं, हिन्दी विश्व स्वागत के लिए तैयार है। ■

पुस्तक : वैश्विक रचनाकार : कुल मूलभूत जिज्ञासाएँ साक्षात्कार संग्रह, संपादक सुधा ओम ढींगरा, प्रकाशक, शिवना प्रकाशन, सीहोर, म.प्र., मूल्य : 250/-रुपए

पता : पी.सी. लैब, सम्राट काम्प्लैक्स बेसमेंट बस स्टैण्ड के सामने, सीहोर-466001
मो. : 09977855399

(पृष्ठ 74 का शेष)

इस बीच उसे और परवेज को पता चल गया था कि उसके कमर के नीचे का पूरा दायाँ हिस्सा अब बेकार हो चुका है और परवेज की ही तरह उसे भी अपनी बाकी जिंदगी बैसाखियों के सहारे गुजारनी होगी। परवेज यह खबर सुनकर शून्य सा हो गया था पर गुलाम ने यह खबर बड़ी हिम्मत के साथ सुनी और खबर सुनाने वाले डॉक्टर की तरफ देखकर हौले से मुस्कुरा दिया पर ठीक छः महीने तीन दिन बाद जब डॉक्टर और नर्सों ने उसे बैसाखी के सहारे चलाने की कोशिश की तो वह परवेज के कंधे पर सर रख कर फूट-फूट कर रो पड़ा और तब परवेज भी अपने आँसुओं पर लगाम नहीं सका। दोनों भाई एक-दूसरे से बहुत देर तक लिपटे रहे और गमों का एक सैलाब उनकी आँखों से निकल-निकल वहाँ मौजूद सभी गैर-मुर्दा और मुर्दा चीजों को अपनी आगोश में लेता रहा।

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरा पूरा वजूद ही नकारा हो गया हो। मैं बस चुपचाप उन्हें रोते हुए देखता रहा। मेरे अंदर इतनी हिम्मत भी नहीं बची थी कि उनमें से किसी एक के भी कंधे पर हाथ रखकर थोड़ी सी दिलासा दे दूँ।

गुलाम ने जब टेपरिकार्डर की आवाज बहुत तेज कर दी और शमीमा आजाद की आवाज घर्र-घर्र करते हुए अचानक ही बहुत तेज हो गयी तो मैंने चौंक कर देखा। परवेज मेरी तरफ देखकर मुस्कुरा रहा था। एक भीगी हुई मुस्कुराहट।

''लगता है आप कहीं दूर जाकर खो गए थे।'' उसकी आवाज अब भी नम थी।

मैंने उसे बताना चाहा कि मैं कहाँ खो गया था पर कुछ कह नहीं पाया। मैं देख रहा था कि मेरे चैनल ने मुझे राजधानी में होने वाले गणतंत्र दिवस की कवरेज की जिम्मेदारी सौंपी है। मैं अपनी कमेंट्री तिरंगे को कैमरे में फोकस करवाते हुए शुरू करता हूँ। लहराता हुआ तिरंगा कभी पूरी तरह कैमरे की गिरफ्त में आ जाता है और कभी आधा-अधूरा ही। फिर कैमरा भारत के मानचित्र को दिखाता है। पर अजीब बात है। मानचित्र भी कभी पूरी तरह कैमरे के फोकस में होता है और कभी आधा-अधूरा ही। अब कैमरा भारत के अलग-अलग राज्यों से होता हुआ कश्मीर तक पहुँच चुका है। पर कश्मीर भी कभी पूरा दिखता है और कभी आधा-अधूरा। उस कभी-कभी पूरा और कभी-कभी आधे-अधूरे दिखते कश्मीर के पीछे सेना और पुलिस के जवान अपने-अपने करतब दिखाते चले जा रहे हैं एक बच्ची कश्मीर के मानचित्र से बाहर निकल आयी है उसके हाथों में कई तरह के साज हैं जिन्हें वह बहुत ही जोश व खरोश के साथ बजा रही है और उसके होंठों से एक सुरीला नगमा फूटकर फजा में मुन्तसर हो रहा है रुकैय्या. ..नहीं...हाँ...शायद उसके पीछे-पीछे कुछ अजीब से लोग हैं उनके हाथों में एक फतवा है साज हराम हैं, मौसिकी हराम है, रक्श हराम है। टेपरिकार्डर से निकलने वाली मौसिकी तेज हो गयी है गुलाम और परवेज उठकर नाचने लगे हैं नाचते-नाचते वे एक दूसरे से लिपट जाते हैं मैं उनकी ओर देखता हूँ वे कभी पूरे-पूरे दिखाई देते हैं, कभी आधे-अधूरे। ■

पता : ए .आई.आई.एस., डी-31ए डिफेन्स कॉलोनी नई दिल्ली-110024
मो. : 09971598915

आधी पीली आधी हरी

डॉ. गौतम सचदेव

अमन प्रकाशन, 104 ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-12 (उ.प्र.) मूल्य- 300 ₹

21 कहानियों के इस संग्रह में मानवीय सम्बंधों के ऊहापोह की कहानियां हैं. स्वदेश से दूर जा बसे लोगों में व्याप्त मान्यताओं को आहत करती इन कहानियों में आधुनिकता और वैश्वीकरण से उपजी परिस्थितियों की बानगी है. 'आधी पीली आधी हरी' कहानी में एक तलाकशुदा दम्पत्ति की संतान की दुविधा और सम्बंधों के असंतुलन की गाथा है. कहानियों में अपने समाज से दूर धनोपार्जन की चाहत से गये लोगों की व्यथा का विशद चित्रण है.

कृष्णा तीरे

यशवंत राव चव्हाण

अनु. प्रकाश भातम्ब्रेकर

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, जन. जगन्नाथ भोसले मार्ग, मुंबई, मूल्य-300 ₹

यह पुस्तक महाराष्ट्र और राष्ट्रीय राजनीति के कद्दावर नेता के रूप में लोकप्रिय रहे यशवंतराव चव्हाण की आत्मकथा है. इसे तीन खंडों में रखा गया है. पहले खंड में उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, जन्म और बचपन के साथ शिक्षा-दीक्षा और युवावस्था तक का वर्णन है. दूसरे खंड में उनके वैचारिक आंदोलनों की विस्तृत चर्चा है. तीसरे खंड में स्वतंत्रता आदोलन के दिनों से लेकर आज़ाद भारत तक की जीवन-यात्रा का पठनीय विवरण है.

रुद्रावतार और राम की शक्ति पूजा

डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय

अमन प्रकाशन- 104 ए/80-सी, रामबाग, कानपुर- 208012 मूल्य- 250 ₹

उद्भ्रांत की कविताओं पर यह आलोचनात्मक कृति है. इस पुस्तक में रुद्रावतार का मूल पाठ, राम की शक्तिपूजा का मूल पाठ, रुद्रावतार की सृजन प्रक्रिया और विद्वानों के विमर्श का संकलन किया गया है. लक्ष्मीकांत पाण्डेय ने इन दो मिथक ग्रंथों का अपनी दृष्टि से आलोचना परक लेखन किया है. कुछ विद्वतजनों के व्याख्यानों का संकलन भी है जिन्होंने रचनाओं के मिथकीय पक्ष पर अपनी राय दी है.

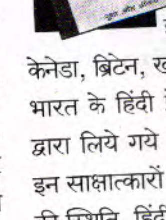

वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं

सुधा ओम ढींगरा

शिवना प्रकाशन, पी.सी. लैब सम्राट काम्प्लेक्स बेसमेंट, बस स्टैंड, सीहोर-466001(म.प्र.) मूल्य-250 ₹

इस पुस्तक में अमेरिका, केनेडा, ब्रिटेन, खाड़ी देश, डेनमार्क, नार्वे और भारत के हिंदी प्रेमी रचनाकारों के लेखिका द्वारा लिये गये साक्षात्कारों का संकलन है. इन साक्षात्कारों के माध्यम से विदेशों में हिंदी की स्थिति, हिंदी के रचनाकारों की सोच और उनका संक्षिप्त परिचय भी मिलता है. हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को जानने-समझने के लिए पुस्तक उपयोगी है.

अमन है अधूरा सूर्य

'आधा ख़ून हिन्दू, आधा मुसलमान' इस विचारोत्तेजक पंक्ति के साथ प्रारम्भ होता है, वरिष्ठ साहित्यकार प्रकाशकान्त का उपन्यास 'अधूरे सूर्यों के सत्य'। यह वाक्य इस उपन्यास के नायक अमन उमाशंकर के पूरे जीवन की त्रासदी को उजागर करता है। अमन के पिता उमाशंकर कर्मकांडी ब्राह्मण परिवार से थे और उसकी माँ मुसलमान। अमन जब तक जीवित रहा यही सोचता रहा कि वह कौन है? हिन्दू या मुसलमान। अमन हमेशा यही सोचता रहा कि क्या हिन्दू या मुसलमान से अलग वह कुछ नहीं है? क्या केवल इनसान बनकर इस संसार में जीवित नहीं रहा जा सकता? अमन के एकमात्र मित्र जैकब की स्थिति लगभग उसी के जैसी थी क्योंकि उसके पिता गंगाराम चमार से ईसाई बने थे परन्तु इसके बाद गंगाराम न पूरा चमार बन सके न ईसाइयों ने उन्हें पूरी तरह स्वीकारा। प्रकाशकान्त ने अमन और जैकब के माध्यम से जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर लोगों की संकीर्ण सोच को उजागर किया है। इस पूरे उपन्यास में अमन स्वयं की खोज करता रहता है पर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचता तो वह कुंठा और आत्मपीड़ा से जकड़ जाता है। जब कोई बच्चा जन्म लेता है तो वह किसी धर्म का चयन नहीं करता, उसे तो वह बस मिल जाता है। अब वह हिन्दू है या मुसलमान, सिक्ख है या ईसाई या कि आधा हिन्दू और आधा मुसलमान है। इसमें उसका क्या दोष? अमन भी इन बातों को समझता है परन्तु वह कभी इस परेशानी से उबर नहीं पाता। उसे लगता है जब साम्प्रदायिक दंगे होंगे तो वह ज़रूर मारा जाएगा क्योंकि उसे मारनेवाला हिन्दू भी हो सकता है और मुसलमान भी। इस उपन्यास में अधूरा सूर्य अमन है। वह दो धर्मों के बीच झूलता रहता है, वह स्वयं को कभी पूरे इनसान के रूप में नहीं देख पाता।

अधूरे सूर्यों के सत्य की कहानी स्वतन्त्रता पूर्व से शुरू होकर वर्तमान तक चलती है। इसमें स्वतन्त्रता पूर्व की घटनाएँ, परिस्थितियाँ, गाँधी जी, राममनोहर लोहिया, जय प्रकाश, भारत विभाजन के मुख्य कारण रहे मुहम्मद अली जिन्ना की चर्चा भी की गयी है। प्रकाशकान्त जी ने गाँधीवादी विचारधारा पर तो काफ़ी विस्तार से प्रकाश डाला है। लगभग आधे उपन्यास को पढ़ते समय तो ऐसा लगता है कि तत्कालीन इतिहास पढ़ रहे हैं। कहीं-कहीं तो तारीख़ों का भी उल्लेख इस उपन्यास में किया गया है। स्वतन्त्रता के बाद भारत की जो दशा थी, परिस्थितियाँ थीं उनको भी इसके माध्यम से काफ़ी हद तक समझा जा सकता है। मुख्य रूप से 1940 से 1995 तक के कालखंड की चर्चा इस उपन्यास में की गयी है।

'अधूरे सूर्यों के सत्य' उपन्यास का आरम्भ एवं अन्त दोनों ही 'प्रश्न' के साथ होते हैं। अमन की मौत कैसे हुई? क्या यह आत्महत्या थी? या वह किसी हिन्दू या मुसलमान के द्वारा मारा गया। जिसका उसे डर था। यह उपन्यास शुरू से अन्त तक पाठक की जिज्ञासा बनाये रखता है। प्रकाशकान्त ने इस उपन्यास में कई समस्याओं को एक साथ उठाया है परन्तु किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया वरन् समस्याओं को यथार्थ रूप में पाठक के समक्ष रखा है।

अधूरे सूर्यों के सत्य—प्रकाश कान्त, अनिका प्रकाशन, गाजियाबाद, 160 रु.

वैश्विक रचनाकारों का रचना संसार

'साक्षात्कार' का एक स्वतन्त्र विधा के रूप में महत्त्व निर्विवाद है। भेंटवार्ता में साहित्यकारों के अन्तरंग जीवन, उनकी रचना दृष्टि, उनकी रचनाओं की मूल प्रेरणा, उन पर पड़नेवाले प्रभाव, उनकी विचारधारा तथा उनके प्रयोजन और उद्देश्यों की प्रत्यक्ष रूप से सूचना मिलती है तथा इससे प्रबुद्ध व्यक्तियों के विचारों को जनसाधारण तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है। परन्तु यह एक कठिन कार्य है, वह भी तब जब कि विश्व के अनेक देशों में रहनेवाले साहित्यकारों की बात हो। 'वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' में 'सुधा ओम ढींगरा' ने इसी कठिन कार्य को सम्भव कर दिखाया है। सुधा जी ने भारत तथा विश्व के अनेक देशों में रह रहे हिन्दी के 23 प्रतिष्ठित रचनाकारों के साक्षात्कारों को चुना है। अमेरिका से वेदप्रकाश 'बटुक', सुषमा बेदी, सुदर्शन 'प्रियदर्शिनी', अनिल प्रभा कुमार, पुष्पा सक्सेना, डॉ. मृदुल कीर्ति, रेखा मैत्र, देवी नागरानी, शशि पाधा, राकेश खंडेलवाल, अनिता कपूर। कनाडा से— प्रो. हरिशंकर आदेश, श्याम त्रिपाठी। ब्रिटेन से तेजेन्द्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, अचला शर्मा, दिव्या माथुर। खाड़ी देशों से कृष्ण बिहारी, पूर्णिमा वर्मन। डेनमार्क से अर्चना पेन्यूली। नार्वे से सुरेश शुक्ल, शरद आलोक। भारत से एस.आर. हरनोट एवं रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'। इन सभी प्रबुद्ध साहित्यकारों के 'साक्षात्कार' एक साथ पढ़ पाना एक सुखद अनुभूति है। ये सभी साक्षात्कार सुधा जी ने वेब पत्रिका 'गर्भनाल' हेतु लिए गये साक्षात्कारों में से चुने हैं। चुने गये सभी साहित्यकार अलग-अलग देशों में, परिवेश में रह रहे हैं, सभी की अपनी विशेषताएँ हैं, सभी के अपने अनुभव हैं। विदेश जाना लगभग सभी को आकर्षित करता है। परन्तु विदेश जानेवालों को केवल सुख, सुविधाएँ ही नहीं मिलतीं, कई समस्याएँ भी उनके सामने आती हैं। उनकी घुटन, छटपटाहट एवं 'प्रवासी' कहलाये जाने की वेदना भी इन साक्षात्कारों में हमें दिखाई देती है। अधिकतर रचनाकारों का मानना है कि 'प्रवासी साहित्यकारों' को गम्भीरता से नहीं लिया जाता, उन्हें हाशिये पर डाल दिया जाता है।

'वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' में सम्मिलित रचनाकार न केवल अलग-अलग देशों में रहते हैं वरन् उनकी विचारधारा, दृष्टिकोण, रुचियाँ-अभिरुचियाँ, विशेषताएँ, योग्यताएँ, मान्यताएँ, तर्क एवं लेखन का ढंग भिन्न-भिन्न है। यह पुस्तक पाठकों को वैश्विक हिन्दी रचनाकारों के व्यक्तित्व, कृतित्व, अनुभवों एवं प्रयासों को नज़दीक से समझने का अवसर प्रदान करती है। कुछ रचनाकारों के साक्षात्कार तो ऐसे हैं, जो बहुत कुछ सिखाने की सामर्थ्य रखते हैं— तेजेन्द्र शर्मा ने कहानी लिखने के ढंग पर काफ़ी विस्तार से अपने विचार प्रकट किये हैं। वे लेखन को किसी विचारधारा में बाँधने के पक्षधर नहीं हैं, उनका मानना है, ''लेखन के लिए विचार आवश्यक है, विचारधारा नहीं।'' ऐसे ही 'अभिव्यक्ति' एवं 'अनुभूति' जैसी वेब पत्रिकाओं का प्रारम्भ करनेवाली, हिन्दी के विकास के लिए प्रतिबद्ध 'पूर्णिमा बर्मन' हिन्दी के विकास के लिए सुझाव देती हैं, ''हिन्दी धर्म और साहित्य की भाषा बनती जा रही

है। विज्ञान, व्यापार और चिकित्सा एवं राजकाज में जैसा विकास होना चाहिए वैसा नहीं है।'' विश्वभर में रह रहे हिन्दी के इन रचनाकारों ने ऐसे कई गम्भीर मुद्दों पर अपने विचार प्रकट किये हैं। सुधा ओम ढींगरा ने रचनाकारों से अपनी विशेषताओं के आधार पर संवेदनशील एवं महत्त्वपूर्ण प्रश्न किये हैं लेकिन कुछ प्रश्न ऐसे भी हैं जिनकी आवृत्ति बार-बार हुई है, परन्तु प्रश्न एक होने पर भी उत्तरों में बहुत विविधता है जिससे सभी साक्षात्कार रुचिकर एवं जीवन्त बन पड़े हैं। इस पुस्तक में ऐसे साक्षात्कार बहुत कम हैं जो आमने-सामने बैठकर लिए गये हों। व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो ऐसा करना कठिन भी है। इसलिए सुधा जी ने फ़ोन, ऑनलाइन एवं स्काइप जैसी तकनीकों का प्रयोग किया है। लेकिन किसी भी साक्षात्कार को पढ़ते समय ऐसा नहीं लगता कि साक्षात्कार आमने-सामने बैठकर नहीं लिया गया है। इन 23 साक्षात्कारों के अलावा एक महत्त्वपूर्ण साक्षात्कार स्वयं सुधा ओम ढींगरा का भी है जिसे कंचन सिंह चौहान ने लिया है। यह साक्षात्कार इस पुस्तक को पूर्णता प्रदान करता है। 'वैश्विक रचनाकार कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' एक ऐसी पुस्तक है जिसे पढ़ने के बाद विश्व के अनेक देशों में रहकर हिन्दी में सृजन कर रहे रचनाकारों के प्रति पाठक के दृष्टिकोण में परिवर्तन आएगा तथा उन्हें भी वही सम्मान मिलेगा जो भारत में रहने वाले हिन्दी के रचनाकारों को मिलता है।

वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ— सुधा ओम ढींगरा, शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्य प्रदेश, मूल्य: 250 रु.

एल-235, शास्त्री नगर, मेरठ-250004
मो.: 09457034271

साक्षात्कार

अंक : 408, दिसंबर 2013

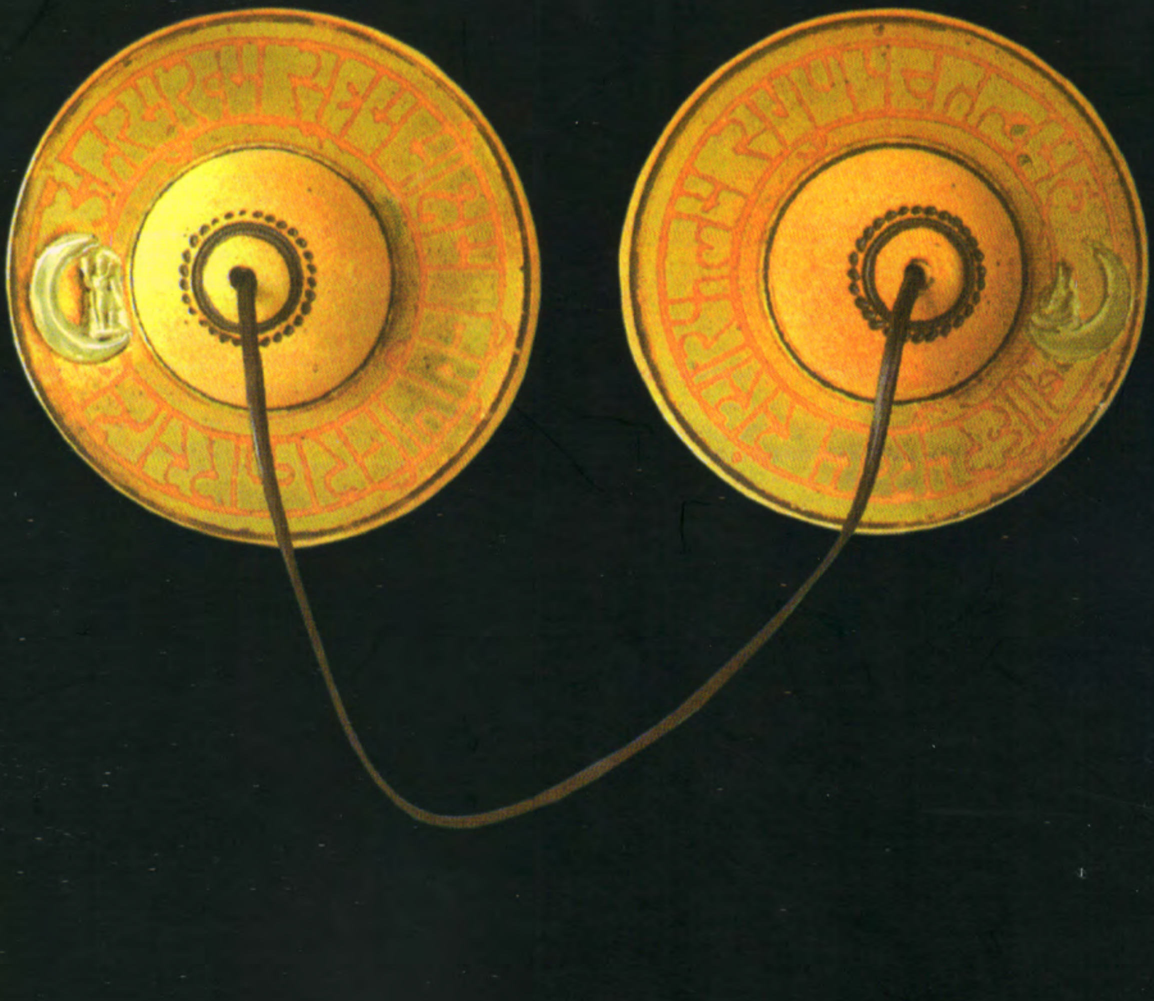

सुशील सिद्धार्थ

संवादधर्मिता साक्षात्कार का सौंदर्य है

सुधा जी को इस विधा में दिलचस्पी है। उन्होंने अनुभव और अध्ययन से इसे विकसित किया है। वे ऐसी लेखक हैं, जिन्हें टेक्नालॉजी का महत्त्व पता है। बातचीत करने के लिए आमने-सामने होने के अतिरिक्त उन्होंने फोन, ऑनलाईन और स्काइप का उपयोग किया है। बल्कि आमना-सामना अत्यल्प है। इससे कई बार औपचारिक या किताबी होने का संकट रहता है जो स्वाभाविक है।... लेकिन यह देखकर प्रसन्नता होती है कि सारे साक्षात्कार जीवंत और दिलचस्प हैं।

साक्षात्कार अत्यंत लोकप्रिय और उपयोगी विधा है। पाठक यह अनुभव करता है जैसे वह किसी रचनाकार के सामने बैठकर उससे बातें कर रहा है। उपयोगी इसलिए कि इसमें रचनाकार के 'अंतः साक्ष्य' मिलते हैं। इन साक्ष्यों से रचना संसार को समझने में मदद मिलती है। विद्वान आदि विधा के नाम पर कहानी या कविता का नाम लेते रहते हैं। मुझे लगने लगा है कि संवाद ही साहित्य की आदि विधा है। कोई भी प्राणी सबसे पहले अपने अकेलेपन को समाप्त करना चाहता है। गालिब जब कहते हैं-'रहिए अब ऐसी जगह चल कर जहाँ कोई न हो, हमसुखन कोई न हो तो हमज़बाँ कोई न हो' तो उनकी त्रासदी समझी जा सकती है। यह असामान्य मनोदशा है। सामान्य स्थिति यह है कि मनुष्य किसी की बात सुनना चाहता हैं, किसी से कुछ कहना चाहता है। संवाद सभ्यता और संस्कृति का बीज रूप है। इस संवाद और साक्षात्कार ने न जाने कितने रूप बदले हैं, जाने कितने नामों से स्वयं को व्यक्त किया है। आधुनिक साहित्य में साक्षात्कार को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बातचीत, संवाद, आमने-सामने या कुछ और नामों से साक्षात्कार पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं... खूब पढ़े जाते हैं।

पुस्तक : वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ

लेखक : सुधा ओम ढींगरा, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

कुछ पत्रकारों और लेखकों ने साक्षात्कार लेने की कला को एक रचनात्मक हुनर बना लिया है। उन्हें पता है कि किस लेखक से बात करने का सलीका क्या है। संवाद एक सलीका ही तो है। साक्षात्कार का सौंदर्य हैं संवादधर्मी होना।... ऐसी अनेक विशेषताएँ' सुधा ओम ढींगरा द्वारा लिए गए साक्षात्कारों में सहज रूप से उपलब्ध हैं। 'वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' में मौजूद साक्षात्कार इस विधा की गरिमा को समृद्ध करते हैं। समर्पित रचनाकार सुधा ओम ढींगरा बातचीत करने में दक्ष हैं। वैसे जब भी जब वे फोन करती हैं तो अपनी मधुर आवाज से वातावरण सरस बना देती हैं। जीवंतता साक्षात्कार लेने वाले का सबसे बड़ा गुण हैं। बातचीत को किसी फाइल की तरह निपटा देने से मामला बनता नहीं। सुधा जी को इस विधा में दिलचस्पी है। उन्होंने अनुभव और अध्ययन से इसे विकसित किया है। वे ऐसी लेखक हैं, जिन्हें टेक्नालॉजी का महत्त्व पता है। बातचीत करने के लिए आमने-सामने होने के अतिरिक्त उन्होंने फोन, ऑनलाईन और स्काइप का उपयोग किया है। बल्कि आमना-सामना अत्यल्प है। इससे कई बार औपचारिक या किताबी होने का संकट रहता है जो स्वाभाविक है।... लेकिन यह देखकर प्रसन्नता होती है कि सारे साक्षात्कार जीवंत और दिलचस्प हैं।

अमेरिका, कैनेडा, इंग्लैंड, आबूधाबी, शारजाह, डेनमार्क और नार्वे के साहित्यकारों से सुधा जी के प्रश्न स-तर्क हैं। साहित्यकारों ने भी सटीक उत्तर दिए हैं। यह पुस्तक पाठकों की ज्ञानवृद्धि के साथ उनकी संवेदना का दायरा भी व्यापक करेगी। वैश्विक रचनाशीलता की मानसिकता को यहाँ लक्षित किया जा सकता है। ऐसी पुस्तकें हिंदी में बहुत कम हैं। शायद न के बराबर। विश्व के अनेक देशों में सक्रिय हिंदी रचनाकारों के विचार पाठकों तक पहुँचाने के लिए हमें सुधा ओम ढींगरा को धन्यवाद भी देना चाहिए। हिंदी में कुछ विशेषज्ञ रहे हैं जो साक्षात्कार को रचना बना देते हैं। सुधा जी को देखकर... उनके काम को पढ़कर और इस विधा के विषय में उनके विचार जानकर उनकी विशेषज्ञता की सराहना की जानी चाहिए।

इस पुस्तक के लिए श्रेष्ठ रचनाकार और संवेदनशील संवादिया सुधा ओम ढींगरा को बहुत-बहुत बधाई। शुभकामनाएँ। यह भरोसा है कि वे अपनी इस यात्रा को अनुद्घाटित दिशाओं में ले जाएँगी। 'वैश्विक रचनाकार: कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' को पढ़कर प्रवासी लेखन कह कर अनेक लेखकों को हाशिए पर ढकेलने की प्रवृत्ति भी कम होगी।

संपर्क : संपादक, राजकमल प्रकाशन
1, बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली
मो. 09868076182

संवादधर्मिता साक्षात्कार का सौंदर्य है

साक्षात्कार अत्यंत लोकप्रिय और उपयोगी विधा है। पाठक यह अनुभव करता है जैसे वह किसी रचनाकार के सामने बैठकर उससे बातें कर रहा है। उपयोगी इसलिए कि इसमें रचनाकार के 'अंतः साक्ष्य' मिलते हैं। इन साक्ष्यों से रचना संसार को समझने में मदद मिलती है। विद्वान् आदि विधा के नाम पर कहानी या कविता का नाम लेते रहते हैं। मुझे लगने लगा है कि संवाद ही साहित्य की आदि विधा है। कोई भी प्राणी सबसे पहले अपने अकेलेपन को समाप्त करना चाहता है। गालिब जब कहते हैं- 'रहिये अब ऐसी जगह चल कर जहां कोई न हो, हमसुखन कोई न हो और हमजबां कोई न हो' तो उनकी त्रासदी समझी जा सकती है। यह असामान्य मनोदशा है। सामान्य स्थिति यह है कि मनुष्य किसी की बात सुनना चाहता है, किसी से कुछ कहना चाहता है। संवाद सभ्यता और संस्कृति का बीज रूप है। इस संवाद और साक्षात्कार ने न जाने कितने रूप बदले हैं, जाने कितने नामों से स्वयं को व्यक्त किया है। आधुनिक साहित्य में साक्षात्कार को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बातचीत, संवाद, आमने सामने या कुछ और नामों से साक्षात्कार पत्र पत्रिकाओं में छपते हैं... खूब पढ़े जाते हैं।

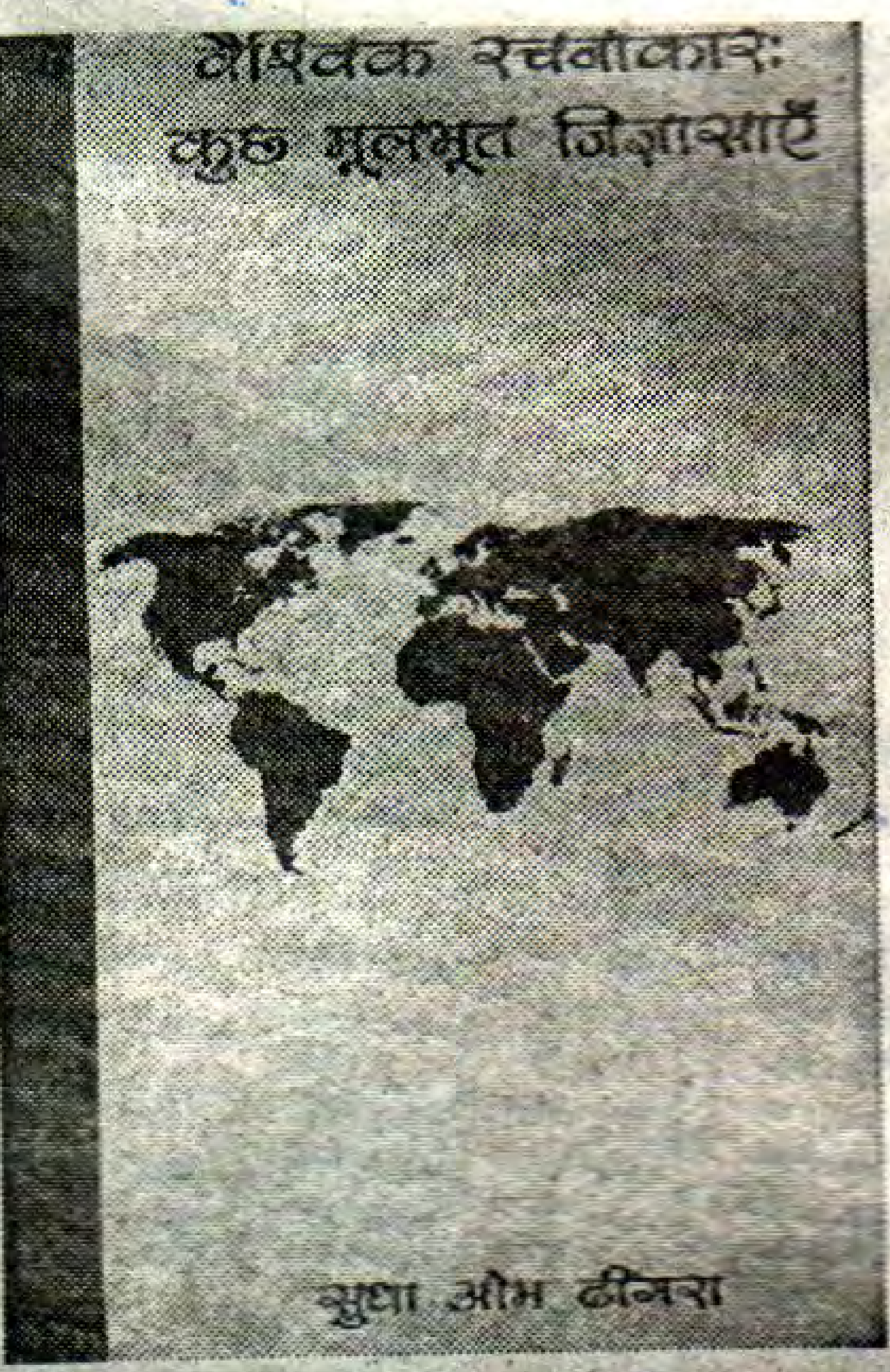

कुछ पत्रकारों और लेखकों ने साक्षात्कार लेने की कला को एक रचनात्मक हुनर बना लिया है। उन्हें पता है कि किस लेखक से बात करने का सलीका क्या है। संवाद एक सलीका ही तो है। साक्षात्कार का सौन्दर्य है कि संवादधर्मी होना। ...ऐसी अनेक विशेषताएं सुधा ओम ढींगरा द्वारा लिये गये साक्षात्कारों में सहज रूप से उपलब्ध हैं। 'वैश्विक रचनाकार: कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं' में मौजूद साक्षात्कार इस विधा की गरिमा को समृद्ध करते हैं। समर्पित रचनाकार सुधा ओम ढींगरा बातचीत करने में दक्ष हैं। वैसे भी जब वे फोन करती हैं तो अपनी मधुर आवाज से वातावरण सरस बना देती हैं। जीवन्तता साक्षात्कार लेने वाले का सबसे बड़ा गुण है। बातचीत को किसी फाइल की तरह निपटा देने से मामला बनता नहीं। सुधा जी को इस विधा में दिलचस्पी है। उन्होंने अनुभव और अध्ययन से इसे विकसित किया है। वे ऐसी लेखक हैं, जिन्हें टेक्नोलॉजी का महत्व पता है। बातचीत करने के लिए आमने सामने होने के अतिरिक्त उन्होंने फोन, आनलाइन और स्काइप का उपयोग किया है। बल्कि आमना-सामना अत्यल्प है। इससे कई बार औपचारिक या किताबी होने का संकट रहता है जो स्वाभाविक है।... लेकिन यह देखकर प्रसन्नता होती है कि सारे साक्षात्कार जीवन्त और दिलचस्प हैं।

अमेरिका, कैनेडा, इंग्लैण्ड, आबूधाबी, शारजाह, डेनमार्क और नार्वे के साहित्यकारों से सुधा जी के प्रश्न सतर्क हैं। साहित्यकारों ने भी सटीक उत्तर दिये हैं। यह पुस्तक पाठकों की ज्ञानवृद्धि के साथ उनकी संवेदना का दायरा भी व्यापक करेगी। वैश्विक रचनाशीलता की मानसिकता को यहां लक्षित किया जा सकता है। ऐसी पुस्तकें हिन्दी में बहुत कम हैं। शायद न के बराबर। विश्व के अनेक देशों में सक्रिय हिन्दी रचनाकारों के विचार पाठकों तक पहुंचाने के लिए हमें सुधा ओम ढींगरा की सराहना करनी चाहिए।

इस पुस्तक के लिए श्रेष्ठ रचनाकार और संवेदनशील संवादिया सुधा ओम ढींगरा से यह भरोसा है कि वह अपनी इस यात्रा को अनुद्घाटित दिशाओं में ले जाएंगी। 'वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं' को पढ़कर प्रवासी लेखन कह कर अनेक लेखकों को हाशिए पर ढकेलने की प्रवृत्ति भी कम होगी।

- सुशील सिद्धार्थ

वैश्विक रचनाकार : कुछ, मूलभूत जिज्ञासाएं : लेखिका, सुधा ओम ढींगरा, प्रकाशक शिवना प्रकाशक, पी.सी. लैब, सम्राट काम्पलेक्स बेसमेंट, बस स्टैंड सीहोर (म.प्र.), पृष्ठ संख्या 232, मूल्य : 250 रु.।

वैश्विक परिवार से संवाद

■ सुशील सिद्धार्थ

किसी भी प्रारूप में विचारों, भावों, अनुभवों और रचनात्मक संकल्पों का संप्रेषण आवश्यक है। इसके अभाव में हमारे अनुमान यहां से वहां भटकते रहते हैं। उदाहरण के लिए हम सचमुच हिंदी के विराट परिवार के लेखकों के विषय में जानना चाहते हैं। इन वैश्विक रचनाकारों में अधिकांश को हम प्रवासी कहते हैं। प्रवासी लेखकों के बारे में लिखते-पढ़ते हुए भावुकता, विशिष्टताबोध और कई बार अजीब बेगानगी का भाव उमड़ आता है। पर्याप्त परिचय के अभाव में ऐसा होना स्वाभाविक है। इस संदर्भ में सुधा ओम ढींगरा द्वारा अमेरिका, कैनेडा, ब्रिटेन, खाड़ी देश, डेनमार्क, नार्वे और भारत के कुछ रचनाकारों से लिए गए साक्षात्कार हमारी बहुत मदद करते हैं। 'वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं' में ये साक्षात्कार पढ़े जा सकते हैं। सुधा पुस्तक की भूमिका में कहती हैं, 'साक्षात्कार विधा से मेरा नाता बहुत पुराना है।' यह पुराना नाता विधा के प्रति उनकी अभिरुचि और उसके विविध पक्षों पर अधिकार की भी खबर देता है। साक्षात्कार लेना एक विशेष कला है। अपने मन की बात कागज पर उतारने में कई बार कठिनाई होती है, तब दूसरे के मन में प्रवेश कर वहां से मूल्यवान अभिव्यक्तियां ले आना कितना दुष्कर है। सुधा ने यह कठिन काम आसानी से कर दिखाया है। एक श्रेष्ठ साक्षात्कार लेने वाले में जो गुण होने चाहिए वे उनमें हैं। किताब में शामिल साक्षात्कार संबंधित रचनाकारों के मंतव्यों को तो प्रकट करते ही हैं, वे गहराई में जाकर जीवन के जरूरी सूत्रों को भी सहेजते हैं। हम इसी दृष्टि से इस पुस्तक का थोड़ा-सा विश्लेषण करेंगे। वेदप्रताप बटुक का यह कहना कि शिविरबद्धता के कारण... एक पूरी पीढ़ी बिना पढ़े चली गई। यह स्थिति आज भी बनी है।

वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं
संपादक : सुधा ओम ढींगरा
शिवना प्रकाशन, सीहोर, म.प्र.
मूल्य : 250 रुपए

सुषमा बेदी को हिंदी जगत में खासी ख्याति प्राप्त है, अपने लिखने के मूल विषय बताते हुए वह परिवेश को जानने की बात करती हैं। प्रवासी लेखकों से वह कहती हैं, 'लेखक का काम कलात्मक मूल्यों की मानवीय मूल्यों की स्थापना है, न कि मात्र भारतीयता की श्रेष्ठता का ढिंढोरा पीटना।' सुदर्शन प्रियदर्शिनी में जो सघन भावुकता है वही उनकी शक्ति है। अनिल प्रभा कुमार से सुधा ने एक सही सवाल पूछा है कि 'वैश्विक रचनाकारों की रचनाएं आलोचकों की दृष्टि से ओझल क्यों हो जाती हैं।' इसका जो उत्तर मिला है वह पर्याप्त नहीं है। रचनाकारों को स्वयं भी प्रयास करना होगा। गुटबंदियां हर युग में रही हैं। पुष्पा सक्सेना, मृदुल कीर्ति, रेखा मैत्र, देवी नागरानी, शशि पाधा और राकेश खंडेलवाल ने अपने व्यक्तित्व और लेखन पर तार्किक बातें की हैं। यानी जो रुचता है वह स्वीकार, शेष से ज्यादा मतलब नहीं। विविध विधाओं की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है। अनिता कपूर से सुधा एक जरूरी सवाल पूछती हैं कि 'क्या आप अपनी रचनाओं को स्त्री दृष्टि से संपन्न रचनाएं मानती है?' आज जब पूरी दुनिया में स्त्री-विमर्श की सक्रियता है, तब इसका उत्तर लेना जरूरी हो जाता है। सुधा के इस प्रश्न पर तो पूरी परिचर्चा हो सकती है।

प्रो. हरिशंकर आदेश ने सृजन की उपेक्षा कर रहे और हिंदी के नाम पर व्यर्थ का आडंबर रचने वालों को पुरोहित कहा है। श्याम त्रिपाठी इसीलिए कहते हैं, 'हिंदी का कार्य करना कठिन हो गया है।' तेजेंद्र शर्मा रचना और उसकी परिणतियों का अच्छा व्याख्यान करते हैं। स्त्री-विमर्श और नारी आंदोलन को वह साहित्य के बाहर की बात मानते हैं। प्रवासी साहित्य को लेकर भी उनके विचार औरों से जुदा हैं। उषा राजे सक्सेना ने अन्य बातों के साथ स्त्री-विमर्श पर विशेष बातें कही हैं। अचला शर्मा के साक्षात्कार में एक खास बौद्धिक चमक है जो प्रभावित करती है।

दिव्या माथुर अपने लेखन में आने वाली दिक्कतों पर बातें टिकाती हैं। अर्चना पेन्यूली के जवाबों का दायरा बड़ा है। बस एक बात समझ में नहीं आती कि समकालीन लेखकों मे वह केवल नरेंद्र कोहली से प्रभावित हैं। आश्चर्य! सुरेश शुक्ल वीतराग मानसिकता के तहत उत्तर देते हैं। प्रवासी लेखकों में महत्वपूर्ण माने जाने वाले कृष्ण बिहारी का साक्षात्कार ध्यान से पढ़ने योग्य है। पूर्णिमा वर्मन ने वेब पर हिंदी की बहुत सेवा की है। पूर्णिमा की सकारात्मकता उनके उत्तरों में कौंधती है। एस.आर. हरनोट और रामेश्वर काम्बोज अपने कृतित्व के साथ बहुतेरी बातों पर राय देते हैं। पुस्तक में सबका साक्षात्कार लेने वाली सुधा ओम ढींगरा का भी बेहद जीवंत इंटरव्यू है। सुधा और साक्षात्कार दोनों को जानने के लिए यह पढ़ना चाहिए। कंचन सिंह चौहान ने सटीक प्रश्न पूछे हैं।

समग्रत: यह पुस्तक हिंदी की वैश्विक चेतना से युक्त है। प्रवासी रचनाकारों ने बहुत महत्वपूर्ण बातें कही हैं। कोई चाहे तो इन साक्षात्कारों से सूत्र लेकर एक भिन्न आलोचनाशास्त्र निर्मित कर सकता है। इसमें बतरस का आनंद है, संवाद का सौंदर्य है।

❖❖❖

मो. : 09868076182